Total No. of Printed Pages—5

1 SEM TDC HND MIL (A) 1

2013

(November)

HINDI

(Modern Indian Language)

(Arts)

Course : 101

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

Candidates ***eligible*** *for Internal Assessment shall answer Question Nos.* ***1*** *to* ***7***

Full Marks : 80
Pass Marks : 32

Candidates ***not eligible*** *for Internal Assessment shall answer Question Nos.* ***1*** *to* ***8***

Full Marks : 100
Pass Marks : 40

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×3=24

(क) जप माला छापै तिलक, सरे न एकौ कामु।
मन काँचै नाचै बृथा, साँचै राँचै रामु॥
अति अगाध, अति औथरौ नदी, कूप, सरु बाइ।
सो ताकौ सागरु, जहाँ जाकी प्यास बुझाई॥

अथवा

हमन इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या।
रहे आजाद या जग में हमन दुनिया से यारी क्या॥
जो बिछड़े हैं पियारे से भटकते दर बदर फिरते।
हमन यार है हममें हमन को इन्तजारी क्या॥
खलक सब नाम अपने को बहुत कर सिर पटकता है।
हमन गुरु नाम साँचा है हमन दुनिया से यारी क्या॥

(ख)

स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा,
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली!

अथवा

लाल सुरा की धार लपट-सी
कह न इसे देना ज्वाला,
फेनिल मदिरा है, मत इसको
कह देना उर का छाला,
दर्द नशा है इस मदिरा का
विगत स्मृतियाँ साकी हैं;
पीड़ा में आनन्द जिसे हो,
आए मेरी मधुशाला।

(ग) मैं केवल यही कहना चाहती हूँ कि पुरुषों ने स्त्रियों को अपनी पशु-सम्पत्ति समझ कर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है, वह मेरे साथ नहीं चल सकता। यदि तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते, अपने कुल की मर्यादा, नारी का गौरव नहीं बचा सकते, तो मुझे बेच भी नहीं सकते हो।

(Continued)

अथवा

सौभाग्य और दुर्भाग्य मनुष्य की दुर्बलता के नाम हैं। मैं तो पुरुषार्थ को ही सबका नियामक समझता हूँ। पुरुषार्थ ही सौभाग्य को खींच लाता है।

2. "'रामराज्य' कविता द्वारा गोस्वामी तुलसीदास जी ने आदर्श-समाज की प्रतिष्ठा करने का प्रयास किया है।" समीक्षा कीजिए। 7

अथवा

"सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटन लगे, घाव करें गंभीर॥"

बिहारी के पठित दोहों द्वारा समीक्षा कीजिए।

3. 'वे और तुम' कविता का सारांश लिखकर कवि की साहित्यिक प्रतिभा पर प्रकाश डालिए। 11

अथवा

महादेवी वर्मा के साहित्यिक परिचय देकर 'मैं नीर भरी दुःख की बदली' कविता में छिपी पीड़ा और लोक-कल्याण की भावना का वर्णन कीजिए।

4. "'ध्रुवस्वामिनी' एक नायिकाप्रधान नाटक है।" विश्लेषण कीजिए। 6

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

(Turn Over)

5. लक्ष्मीनाथ बैजबरुआ के बहुमुखी व्यक्तित्व और साहित्यिक अवदानों पर प्रकाश डालिए। 8

अथवा

रूपकुँवर ज्योतिप्रसाद अगरवाला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक लेख प्रस्तुत कीजिए।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 4×4=16

(क) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक का उद्देश्य क्या है?

अथवा

पाठ्य नाटक के आधार पर मंदाकिनी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(ख) "यह कथा ज्योति की है अन्धों के माध्यम से"— कवि क्या कहना चाहता है?

(ग) श्रीमंत शंकरदेव द्वारा रचित 'नारायण काहे भकति करों तेरा'—इस बरगीत का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

(घ) "सुनत मौन है रह्यौ ठग्यौ सो, सूर सबै मति नासी॥" कवि ने किस प्रसंग में और क्यों कहा गया है?

7. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×8=8

(क) श्रीमंत शंकरदेव द्वारा प्रवर्तित धर्म को आजकल क्या कहते हैं?

(ख) 'भ्रमरगीत' का मतलब क्या है?

(Continued)

(ग) कुछ आलोचकों के अनुसार आधुनिक युग की मीरा कौन है?

(घ) नागार्जुन का वास्तविक नाम क्या है?

(ङ) प्रसादजी की अन्तिम तथा अन्यतम नाट्यकृति का नाम बताइए।

(च) चन्द्रगुप्त कौन थे?

(छ) लक्ष्मीनाथ बैजबरुआ का छद्म-नाम क्या था?

(ज) ज्योतिप्रसाद अगरवाला किस महाराजा के वंशधर थे?

(In lieu of Internal Assessment)

8. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×2=20

(क) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

(ख) महापुरुष शंकरदेव के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

(ग) 'भ्रमरगीत' के पदों के आधार पर सूरदास की भक्ति-भावना को स्पष्ट कीजिए।

(घ) ज्योतिप्रसाद अगरवाला के वंश-परम्परा का उल्लेख कीजिए।

★★★